इस्लाम में औरतों का दर्जा

क़िस्त-2

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी, जनरल सेक्रेट्री मजलिस उलमा-ए-हिन्द

(4)

अब तक की गुफ़्तगू का खुलासा ये है कि नाम नेहाद तरक़्क़ी याफ़्ता समाज के तमाम दावों के बावजूद औरत आज तक अपने हक़ीक़ी मक़ामो मंज़िलत से महरूम है, बल्कि आइन्दा भी महरूम रहेगी। इसका बुनियादी सबब ये है कि औरतों पर वह फ़राएज़ लादे जा रहे हैं जो उसकी फितरी तबीअत और ख़िलक़त के ख़िलाफ़ हैं। जब तक ख़वातीन की फ़ितरत और तबीअत और उनकी जिस्मानी और रूहानी खुसूसियात की पहचान न हो, उस वक़्त तक उनके फ़राएज़ और हुक़ूक़ को तय नहीं किया जा सकता। अल्लाह तआला ख़ालिक़े इन्सान है वह इन्सान की रग-रग से वाक़िफ़ है, चाहे वह मर्द हो या औरत। एक इन्सान अपनी फ़ितरी ज़रूरियात की पहचान में धोका खा सकता है, लेकिन ख़ालिक़ की निगाह से कोई चीज़ पोशीदा नहीं रह सकती।

इस्लाम आलमे बशरियत के लिए एक मुकम्मल तरीन क़ानून है, चूँकि ये क़ानून उसका बनाया हुआ है जो आरतों और मर्दों का ख़ालिक़ है। लेहाज़ा उसने जो हुक़ूक़ अता फ़रमाए हैं और जो फ़राएज़ मुअय्यन किये हैं, वह दोनों की फ़ितरी, जिस्मानी और रूहानी खुसूसियात व ज़रूरियात के हिसाब से हैं। ख़वातीन से मुताल्लिक़ इस पूरी गुफ़्तगू का सब से अहम पहलू यही है जिस पर इन्शाअल्लाह आइन्दा रौशनी डाली जायेगी। आज मैं चाहता हूँ कि इस पहलू पर गुफ़्तगू हो कि खुद यहूदियों और ईसाईयों की मज़हबी किताबों में ख़वातीन के सिलसिले में क्या कहा गया है और उनको किस दर्जे पर रखा गया है।

हमारी मुक़द्दस इलाही किताब क़ुरआन मजीद पर ईसाईयों और यहूदियों की जानिब से बराबर एतेराज़ात किये जाते रहे हैं। ख़ास तौर से ख़वातीन के मसाएल के सिलसिले में तो एतेराज़ात और इल्ज़ामात की बौछार है। कुछ अरसा पहले बंगलादेश की एक औरत तस्लीमा नसरीन ने जब इस्लाम के ख़िलाफ़ नाज़ेबा बातें शुरु कीं और जुराअत करके यहाँ तक कह दिया कि क़ुरआन की क़वानीन पुराने हो चुके हैं, उन्हें तबदील होना चाहिए तो ईसाईयों और यहूदियों ने उसका ज़बरदस्त इस्तेक़बाल किया।

तस्लीमा नसरीन का अदब में कोई मक़ाम नहीं। उसकी तहरीरें अदबी लेहाज़ से तीसरे दर्जे से भी कमतर हैं, मगर यही थर्ड क्लास मुसन्निफ़ा जब आस्ट्रिया पहुँची तो वहाँ के वज़ीरे आज़म ने तमाम प्रोटोकोल्स (Protocols) को तोड़ते हुए हवाई अड्डे पर आकर उसका इस्तेक़बाल किया, सिर्फ़ इस वजह से कि वह इस्लाम के ख़िलाफ़ लिख और बोल रही है। ईसाई और यहूदी नुमाइन्दे इस बात को भूल जाते हैं कि खुद उनकी मज़हबी किताबों में ख़वातीन उन तमाम हुक़ूक़ से महरूम हैं जो इस्लाम ने अता किये हैं (इस बात पर ध्यान रहे कि जो किताबें वह तौरेत और इन्जील के तौर पर पेश करते हैं ये वह असल किताबें नहीं हैं जो अम्बिया पर नाज़िल हुई थीं) बल्कि मैं समझता हूँ कि इस्लाम के ख़िलाफ़ ये तूफ़ान उठाया ही इसलिए गया है

कि ख़ुद उनकी मज़हबी किताबों की तरफ़ से तवज्जो हट जाए।

यहूदियों की मुक़द्दस किताब तौरेत जिसको अहदनाम-ए-क़दीम भी कहा जाता है, दरअस्ल 39 किताबों पर मुशतमिल है। इनमें ज़्यादा तर सहीफ़े हैं जो मुख़तलिफ़ अम्बिया की तरफ़ मन्सूब हैं। अगरचे ये इन्तेसाबात तहक़ीक़ की कसौटी पर पूरे नहीं उतरते हैं। इससे पहले ज़िक्र हो चुका है कि क़ुरआन करीम की तरफ़ ये बात मन्सूब की जाती है कि हज़रत हव्वा हज़रत आदम की बाईं पसली से पैदा हुईं। हक़ीक़त में ये बात तौरेत में दर्ज है। आज इसका हवाला दिया जा रहा है। तर्जुमाः ''और ख़ुदावन्दे ख़ुदा ने ज़मीन की मिट्टी से इन्सान को बनाया और उसके नथनों में ज़िन्दगी का दम फूँका तो इन्सान जीती जान हुआ'' (सफ़रे पैदाइश, बाबः 2 आयतः 7) हज़रत आदम[अ०] की ख़िलक़त के बाद तौरेत के मुताबिक़। तर्जुमाः ''और ख़ुदावन्दे ख़ुदा ने फ़रमायाः आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं है। मैं इसके लिए मददगार उसके जैसा बनाऊँगा और ख़ुदावन्दे ख़ुदा ने कुल दश्ती जानवर और हवा के कुल परिन्दे मिट्टी से बनाए..... मगर आदम के लिए मददगार कोई उसके जैसा न मिला और ख़ुदावन्दे ख़ुदा ने आदम पर गहरी नींद भेजी और वह सो गया और उसने उसकी पस्लियों में एक को निकाल लिया और उसकी जगह गोश्त भर दिया। ख़ुदावन्दे ख़ुदा ने उस पस्ली से जो उसने आदम[अ०] में से निकाली थी एक औरत बनाकर उसे आदम के सामने लाया और आदम ने कहा ये तो मेरी हड्डियों में से एक हड्डी और मेरे गोश्त में से गोश्त है। इसलिए वह नारी कहलाएगी क्यों ये नर से निकाली गई है। इस वास्ते मर्द अपने माँ-बाप को छोड़ गया और अपनी बीवी से मिला रहेगा।'' (सफ़रे पैदाइश, बाबः 2, आयातः 18-25, तौरेत की मौजूदा और आइन्दा तमाम आयात के तर्जुमेः ''किताबे मुक़द्दस, बाइबिल सोसाइटी हिन्द, बैंगलौर'' से लफ़्ज़ बलफ़्ज़ लिये गये हैं)। पहले बयान हो चुका कि क़ुरआन मजीद में ऐसा कोई तज़किरा नहीं और ये किताबे इलाही पर इत्तेहाम है और तौरेत में औरत की ख़िलक़त के सिलसिले में जो तौहीद और तहक़ीर का पहलू है उसका कोई शाइबा भी क़ुरआन मजीद में मौजूद नहीं है।

अगरचे इससे पहले इन मौज़ूआत पर मुख़्तसर बात हो चुकी है, लेहाज़ा यहाँ पर क़ारेईन की दिलचस्पी के लिए सिर्फ़ हवाले दिये जा रहे हैं ताकि दुनिया को मालूम तो हो कि इल्ज़ाम लगाने वाले हक़ीक़त में ख़ुद भी मुजरिम हैं और ख़वातीन की तहक़ीर क़ुरआन मजीद में नहीं, बल्कि ख़ुद उन्हीं की तहरीफ़शुदा मज़हबी किताबों में मौजूद है। अब रहा ये इल्ज़ाम कि हज़रत हव्वा ने हज़रत आदम को ममनूआ दरख़्त का फल खाने पर मजबूर किया, इसलिए असल ख़ताकार औरत है। ये बात भी तौरेत ही में है, क़ुरआन मजीद में नहीं। हवाला हाज़िर है। तर्जुमाः ''औरत ने ख़ुद देखा वह दरख़्त खाने के लिए अच्छा और आँखों को ख़ुशनुमा मालूम होता है और अक़्ल बख़्शने के लिए ख़ूब है तो उसके फल में से लिया और खाया और अपने शौहर को भी दिया और उसने खाया। तब उन दोनों की आँखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि वह नंगे हैं।'' (सफ़रे पैदाइश, बाबः 3, आयातः 6-7 किताबे मुक़द्दस बैंगलौर)

ख़ुदावन्दे ख़ुदा और आदम के दरमियान बातचीत तौरेत में कुछ इस तरह दर्ज है। तर्जुमाः ''क्या तू ने इस दरख़्त का फल खया जिसकी बाबत मैंने तुझे हुक्म दिया था कि उसे न खाना। आदम ने कहा जिस औरत को तूने मेरे साथ किया था, उसने मुझे उस दरख़्त का फल दिया और मैंने खाया। जब ख़ुदावन्दे ख़ुदा औरत से पूछा कि तूने ये क्या किया। औरत ने कहा साँप ने मुझे बहकाया तो मैंने खाया। ख़ुदावन्दे ख़ुदा ने साँप से कहा इसलिए कि तू ने ये किया तो सब चौपायों और जानवरों में मलऊन हो गया। तू अपने पेट के बल चलेगा और अपनी उम्र भर खाक चाटेगा और मैं तेरे और औरत के दरमियान और तेरी नस्ल और औरत की नस्ल के दरमियान अदावत डालूँगा। वह तेरे सर को कुचलेगा और तू उसकी एड़ी पर काटेगा। फिर उस ने औरत से

कहाः मैं तेरे दर्दे हमल को बहुत बढ़ाऊँगा तू दर्द के साथ बच्चे जनेगी और तेरी रग़बत अपने शौहर की तरफ़ होगी और वह तुझ पर हुकूमत करेगा और आदम से उसने कहाँ चूँकि तूने अपनी बीवी की बात मानी, इसलिए ज़मीन तेरे सबब से लानती हुई। मशक़्क़त के साथ तू अपनी उम्र भर उसकी पैदावार खायेगा, वह तेरे लिए काँटे और ओटंगारे उगाएगी और तू खेत की सब्ज़ी खायेगा।''(सफ़रे पैदाइश, बाबः 3, आयातः 11-19)

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 21 मई 2010ई°)

पर्दा और हज़रत फ़ातिमा सलामुल्लाहि अलैहा

दीने इस्लाम की एक अहम ज़रूरत का नाम पर्दा है। जानबूझ कर अगर कोई इसका इन्कार करे तो वह इस्लाम से ख़ारिज हो सकता है। पर्दा क़ला है क़ैद नहीं, इफ़्फ़त और पाकदामनी है पाबन्दी नहीं, इज़्ज़तो शराफ़त और मतानत है नीचता और ज़िल्लत नहीं, पर्दा ख़ुदावन्दे आलम का हुक्म और फ़ातिमतुज़्ज़हरास° की सीरत है लेहाज़ा दुश्मनों के प्रोपेगण्डे और उनकी शमातत का कोई असर नहीं।

मुसलमान ख़ातून के लिए तो पर्दा इज़्ज़त और बलन्दी की वजह है क्योंकि नबी-ए-अकरमस° की बेटी फ़ातिमतुज़्ज़हरास° को हिजाब और पर्दे से मुहब्बत थी। अगर मुसलमान ख़ातून सिद्दीक़-ए-कुबरा की सीरत का बग़ौर मुताला करे तो वह मग़रिबी तबलीग़ से मुतास्सिर होकर पर्दे को पाबन्दी और ज़िल्लत का सबब नहीं समझेगी बल्कि हिजाब को अपने लिए इज़्ज़त की निशानी समझते हुए दूसरी औरतों को भी बाहिजाब रहने की तलक़ीन करेगी और उनको बावक़ार ज़िन्दगी गुज़ारने का सलीक़ा सिखायेगी।

पर्दा बेहतरीन ज़ेवर

पैग़म्बरे अकरमस° ने अपनी बेटी से पूछाः ''औरत के लिए बेहतरीन चीज़ क्या है?'' तो आपने फ़रमायाः ''औरत के लिए सबसे अच्छी चीज़ये है कि वह किसी नामहरम मर्द को न देखे।''

ये जवाब सुनकर पैग़म्बरे अकरमस° को इतना प्यार आया कि आपने अपनी बेटी को सीने से लगा लिया और फ़रमायाः ''ज़ुर्रियतुन बअ्ज़ुहा मिम बाज़'' इस हदीस शरीफ़ में औरत के लिए बेहतरीन चीज़ ये बताई गई है कि वह नामहरम को न देखे। एक दूसरी रिवायत में हज़रत ज़हरा-ए-मर्ज़िया ने फ़रमाया कि औरत का कमाल ये है कि कोई मर्द उसकी ख़ुशबू भी महसूस न कर पाए लेहाज़ा नाबीना वाली मशहूर रिवायत में जब नबी-ए-अकरमस° ने इजाज़त तलब की और नाबीना की हमराही का तज़किरा किया तो गुज़िश्ता मेयार को अमली जामा पहनाते हुए फ़रमायाः ''अगर वह मुझे नहीं देख रहा है तो क्या हुआ मैं तो उसे देख लूँगी और वह मेरी ख़ुशबू महसूस कर लेगा।'' इस जवाब में रिसालत व नुबुव्वत के ऐसे मक़ासिद पोशीदा थे कि पैग़म्बरे अकरमस° ने फ़ौरन फ़रमायाः ''मैं गवाही देता हूँ कि तुम मेरे वजूद का एक हिस्सा हो''।

मक़सदे ख़िलक़त

तमाम मख़लूक़ात ख़ुसूसन इन्सान की ख़िलक़त का आख़िरी मक़सद ख़ुदावन्दे मुतआल का तक़र्रुब है। क़ुरआन मजीद में ख़िलक़त का मक़सद जो इबादत बयान किया गया है वह भी तक़र्रुबे ख़ुदाए मुतआल को बयान कर रहा है। जो इन्सान जिस क़दर ख़ुदा से मुक़र्रब होगा उतना ही महबूबे बारगाहे इलाही होगा। इस मक़सद तक रसाई कोई ऐसा काम नहीं है कि इन्सान रब्बानी दावे या चन्द अच्छे काम अन्जाम देकर उस दर्जे तक पहुँच जाए बल्कि उस दर्जे तक पहुँचने के लिए इन्सान को अपनी ज़िन्दगी का हर लम्हा ख़ुदा के लिए वक़्फ़ करना पड़ता है पैग़म्बरे अकरमस° ने इसी हक़ीक़त के पेशे नज़र अस्हाब से ये सवाल किया कि औरत किस वक़्त अपने ख़ुदा से सबसे ज़्यादा नज़दीक होती है। अस्हाब में से किसी के पास इसका जवाब नहीं था। हज़रत अलीअ° ये सूरते हाल देखकर हज़रत ज़हरास° के पास तशरीफ़ लाए और आपको सारी दास्तान सुना दी तो आपने फ़रमायाः ''जाइये और बाबा से कह दीजिए कि जब औरत अपने घर के गोशे में होती है तो उस वक़्त ख़ुदा से सब से ज़्यादा नज़दीक

होती है। जब हज़रत अली[अ०] ने जवाब दिया तो नबी अकरम[स०] ने फ़रमायाः या अली ये आपका जवाब नहीं है तो हज़रत अली[अ०] ने फ़रमायाः फ़ातिमा[स०] ने मुझे ये जवाब बताया है। ये सुनकर आपने फ़रमायाः "सदक़्ता अन्ना फ़ातिमतु बज़अतु मिन्नी"।

इस हदीस के बहुत सारे मतलब फ़ायदेमन्द हैं मसलन जिस फ़न का माहिर हो उसी से उसका सवाल करना चाहिए औरत से मुताल्लिक़ सवाल को हज़रत अली[अ०] ने ज़ुज्वे रिसालत से दरयाफ़्त किया।

हज़रत अली[अ०] कभी भी सवाल के जवाब में पीछे नहीं रहे जो सवालात आपसे मरबूत थे उसे बिला फ़ासला हल किया और जो सवालात खुद से मरबूत नहीं थे उसे बिलवास्ता ज़ुज्वे रिसालत के ज़रिये हल किया।

औरत घर में रहकर मुश्किल से मुश्किल मसला हल कर सकती है हर वक़्त घर से बाहर निकलना ज़रूरी नहीं है बल्कि जिस क़दर अपने घर में रहे उतना ही अपनी ख़िलक़त के मक़सद और ख़ुदावन्दे आलम से नज़दीक रहती है। अलबत्ता अगर ज़रूरत हो तो कामिल हिजाब के साथ बाहर निकले जिस तरह ख़ुतब-ए-फ़िदक के लिए हज़रत ज़हरा सलवातुल्लाहि अलैहा बाहर निकली थीं या नसारा-ए-नजरान के मुक़ाबले में सामने आईं थीं। सीरते फ़ातमी पर अमल करने वाली ख़वातीन को फ़क़त बाहर निकलना याद नहीं रहना चाहिए बल्कि बाहर निकलने का तर्ज़ और अन्दाज़ भी मद्देनज़र रहना चाहिए और वाक़ई ज़रूरत को भी पेशे नज़र रखना होगा। किरदारे फ़ातिमतुज़्ज़हरा[स०] में हिजाब और पर्दादारी के इतने बाकमाल अनासिर मौजूद हैं कि मुसलमान ख़ातून अगर सही से इसका मुताला करे तो वह किसी भी सियासी नारे के फ़रेब में आकर धोका नहीं खायेगी। अगर ख़वातीन फ़ातिमा ज़हरा[स०] की इस रिवायत का मुताला कर लें जिसमें पैग़म्बरे अकरम[स०] ने शबे मेराज की दास्तान सुनाते हुए औरतों के अज़ाब का तज़किरा किया है तो कोई ख़ातून भी बेपर्दगी का तसव्वुर नहीं करेगी। फ़क़त इन अज़ाबों में से एक अज़ाब बउनवान नमूना पेश किये देता हूँ कि जो औरत अपने बालों को नामहरम से नहीं छिपाती है क़यामत के दिन अपने बालों से लटकाई जायेगी और उसका दिमाग़ ख़ौल रहा होगा।

वाज़ेह रहे कि जो इन्सान मर्द हो या औरत अपने मक़सदे ख़िलक़त को फ़रामोश कर देगा और ख़ुदावन्दे आलम से बग़ावत का एलान करते हुए पर्दे को छोड़कर बदहिजाबी या बेपर्दगी को तरजीह देंगे और उसके लिए नये-नये बहाने तराशेंगे तो ऐसे इन्सानों के लिए ऐसा अज़ाब कोई ताज्जुब की बात नहीं है।

फ़ातिमा ज़हरा[स०] की ख़ुशहाली

जब पैग़म्बरे अकरम[स०] ने घर के कामों को तक़सीम करते हुए बाहर का काम हज़रत अली[अ०] के हवाले किया और घर के अन्दर का काम हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] के हवाले कर दिया, तो हज़रत ज़हरा मरज़िया[स०] ने फ़रमाया कि ख़ुदा के अलावा किसी को नहीं मालूम कि मैं इस तक़सीम से कितनी ख़ुश हूँ कि पैग़म्बर ने वह काम जो मर्दों से मख़सूस हैं जिसमें मर्दों से राब्ता होता है वह मेरे ज़िम्मे नहीं फ़रमाया।

मुरझाए हुए फूल की मुस्कुराहट

मुरसले आज़म की वफ़ात के बाद ज़हराए मर्ज़िया का चैन व सुकून ही ख़त्म हो गया। कभी आँसू बहाने पर पाबन्दी तो कभी घर पर आग और लकड़ी, कभी मोहसिन की शहादत का ग़म, तो कभी पस्ली टूटने का दर्द इन्हीं ग़मो अलम ने फ़ातिमा ज़हरा[स०] के गोश्त व पोस्त को पानी कर दिया जिस्म पर गोश्त का नाम निशान भी न था। आँसू और नाला व शेवन आपकी ज़िन्दगी के अटूट हिस्से बन चुके थे, गुले रिसालत की पत्तियाँ बिखर रही थीं और आहिस्ता-आहिस्ता इस गुल में पज़मुर्दगी के आसार नुमायाँ हो रहे थे। इस मौक़े पर हंसी क्या मुस्कुराहट का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता लेकिन तारीख़ लिखने वालों ने इस गुले रिसालत की मुस्कुराहट का तज़किरा कया है बाबा की वफ़ात के बाद ये सबसे पहली मुस्कुराहट थी। हुआ यूँ कि ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हात में जब पहलू का दर्द और बाज़ू का

वरम शदीद होने लगा तो असमा से फ़रमायाः "असमा मुझे ये बिल्कुल अच्छा नहीं लगता कि औरतों को मरने के बाद एक ऐसी चीज़ पर लिटाकर चादर डाल दी जाती है जिससे उनके बदन का हजम नुमायाँ होता है। ये सुनते ही असमा ने अर्ज़ कियाः बीबी हब्शा में हम ने एक ताबूत देखा है जिसके अन्दर मय्यत को रखा जाता है फिर असमा ने वह ताबूत बनाकर दिखाया तारीख़ कहती है कि ये देखकर फ़ातिमा ज़हरा[स०] के चेहरे पर मुस्कुराहट के आसार नुमायाँ हुए बाद रसूले ख़ुदा[स०] सिद्दीक़-ए-कुबरा[स०] के चेहरे पर यही अव्वल व आख़िर मुस्कुराहट थी जिसे तारीख़ ने अपने सीने पर महफ़ूज़ किया। मुस्कुराते हुए असमा से फ़रमायाः "(ऐ असमा!) मेरे लिए भी ऐसा ही ताबूत बनाना, मेरे जनाज़े का पर्दा करना ख़ुदा तुम्हें जहन्नम की आग से पर्दे में रखे (महफ़ूज़ रखे)।

सिद्दीक़-ए-कुबरा की शहादत के बाद आपको वसिय्यत के मुताबिक़ ऐसे ही ताबूत में रखा गया और तारीख़े इस्लाम में सबसे पहली बार ताबूत आप ही के लिए इस्तेमाल हुआ। जब किसी ने मासूम से पूछा कि सबसे पहले ताबूत किसके लिए बनाया गया तो आपने फ़रमाया फ़ातिमा बिन्ते रसूल[स०] के लिए।

बिन्ते रसूले ख़ुदा[स०] की शहादत के जांसोज़ और रूह फ़रसा मौक़े पर हम सबको मिलकर इस बात का अहद करना चाहिए कि अगर अब तक कोताहियों के नतीजे में हमारी माएं, बहनें और बेटियाँ बेपर्दा थीं तो आज के बाद वह कभी बेपर्दा नहीं रहेंगी और तमाम ख़वातीन को भी पक्का इरादा करना चाहिए कि बिन्ते रसूल[स०] की ख़ुशी के लिए हम ख़ुद भी बाहिजाब रहेंगे और दूसरी ख़वातीन को भी पर्दे के फ़ायदे बताकर उन्हें बाहिजाब रहने की तलक़ीन करेंगे। **(जारी)**

बक़िया....... इस्लाम दीने अमल है

बस इतना कहूँगा कि अब ज़ुलजनाह की पुश्त ख़ाली हो चुकी थी। अब राकिबे दोशे रसूल[स०] ज़मीन के ऊपर था। इसके बाद न कहूँगा कि रुकू क्योंकर हुआ? क़्याम किस आलम में हुआ? बस सजदे का ज़िक्र और इसी पर मजलिस ख़त्म। यक़ीनन अली[अ०] का सजदा भी यादगार था। 19 रमज़ान की सुब्ह को जिसका गवाह बाद में तुलू होने वाला सूरज था और हुसैन[अ०] का ये आख़िरी सजदा है 10 मुहर्रम की अस्र का जिसका गवाह ग़ुरूब की तरफ़ मायल होता हुआ सूरज है। मगर मैं ख़ुद बारगाहे अमीरुलमोमिनीन में अर्ज़ करूँगा कि या अली[अ०] यक़ीनन आपकी भी नमाज़ और सजदे यादगार हैं मगर आपको सजदे से सर उठाने का मौक़ा मिला। लेकिन हुसैन[अ०] ने तो बस सर सजदे में दिया, वह उसके बाद बलन्द हुआ तो ज़ालिमों के हाथ से नोके नेज़ा पर। **(12 नवम्बर 1977, 11 बजे दिन फ़ज़ाबाद)**